(1)

Vijay Kumar Jha
Deptt in History
V. S. J. College Rajnagar

Degree Part III

Growth of extremist in Indian national movement.

अंग्रेजों के दमनकारी एवं अन्यायपूर्ण नीति के विरुद्ध 1857 ई० में भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का झंडा ऊँचा हुआ जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन कहा जाता है। वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय भावना जगाने में ब्रिटिश शासन के विशेष देन है। ब्रिटिश शासन ने अपनी राजनीतिक लिप्सा पूर्ति के लिये भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बांधा। यातायात के साधनों ने समस्त भारतीय को अपने विचार एक जगह से दूसरे आदान-प्रदान करने में सुगमता हुई। पाश्चात्य शिक्षा ने ही भारतीयों में भारतीयों को स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया। अंग्रेजों का भारतीयों के प्रति अनुदारता का व्यवहार भारतीयों को अंग्रेजो के प्रति विद्वेष भड़काया। अतः अंग्रेजों के यह दमनकारी नीति भारतीयों को अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा कर दिया। भारतीयों ये दमनकारी नीति को सहन नहीं कर सका और वे उग्र राष्ट्रीयता के समर्थक बन गया।

1805 से 1905 तक राष्ट्रीय आन्दोलन के बागडोर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले आदि नेताओं के अगुवाई में रहा ये सभी उदारवादी कहलाते थे जो शांतिपूर्ण एवं धैर्य रखकर आन्दोलन के पक्षधर थे। इसके विपरीत बाल-गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चन्द्र पाल, अरविन्द घोष जैसे महामानव थे जो उग्रवादी विचार धारा के थे जो बलपूर्वक अंग्रेजों से देश आजाद चाहते थे दोनों विचार धारा के लोगों में सैद्धान्तिक मतभेद था।

इन उग्रवादियों ने उदारवादी राष्ट्रवाद को क्रांतिकारी राष्ट्रवाद में परिवर्तित कर दिया। वे उदारवादियों के भिक्षावृति की नीति से सहमत नहीं थे —

इस सन्दर्भ मे तिलक ने कहा था कि "हमको राजनीतिक अधिकारो के लिये संघर्ष करना पड़ेगा। तिलक ने उदारवादियो के विनम्र निवेदन से आज़ादी प्राप्त करना कम बुरा बताया। उन्होंने कहा कि आज़ादी हमें अँग्रेजो पर कठोर दबाव डालकर ही आज़ादी प्राप्त किया जा सकता है।

भारत मे उग्रवादी विचारधारा पैदा होने कि विभिन्न परिस्थितियां थी —

① कांग्रेस के मांगो का ब्रिटीश सरकार द्वारा उपेक्षा करना
② ब्रिटिश शासकों का भारतीय नेताओ के कठोर दंड देना
③ ब्रिटीश शासन कि भारतीयो के आर्थिक शोषण कि नीति
④ भारतीय नवयुवक शिक्षित मे असंतोष कि भावना
⑤ भारत मे अकाल एवं प्लेग जैसे प्राकृतिक आपदा के समय मे अंग्रेजो कि तिरस्कारपूर्ण नीति।
⑥ लार्ड कर्जन द्वारा भारत विरोधी नीति अपनाना जैसे
(I) कलकत्ता कारपोरेशन अधिनियम 1899 पारित करना
(II) सैनिक खर्चा भारतीयो के स्वाधान घटाकर बढ़ना
(IV) युनिवर्सिटि अधिनियम बनाकर युनिवर्सिटी कि आंतरिक स्वतंत्रता समाप्त कर दिया।
(VI) सरकारी भेद अधिनियम 1904 के द्वारा सिविल अधिकार कम कर दिया
(VII) बंगाल का विभाजन 1905 ई - बंगाल विभाजन कर अंग्रेजो हिन्दू और मुसलमानों मे विभेद पैदा कर दिया।
(VIII) ब्रिटीश उपनिवेशो मे भारतीयो के साथ बुरा व्यवहार तथा रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बों मे भारतीयो को नहीं बैठने देना ऊंचे पदों पर भारतीयो कि नियुक्ति को नकारने की प्रवृति

उपर्युक्त कारणों से उग्रवादियो ने आन्दोलन के धार को तेज किया और इस आन्दोलन को जनव्यापी आंदोलन बना दिया इससे राष्ट्रीय आन्दोलन का क्षेत्र व्यापक हो गया। उग्रवादियो ने प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी नीति से मुक्ति पाने के लिये भारतीयो को संगठित किया। इनके लिये

उग्रवादियों ने स्वदेशी आन्दोलन एवं राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा जन साधारण में नवीन चेतना का संचार किया। इस प्रकार उग्रवादियों ने देशवासियों में साहस, निर्भीकता, आत्म निर्भरता तथा स्वाभिमान कि भावना का संचार किया। उग्रवादियों ने भारतीयों में देशभक्ति, निर्भीकता, त्याग एवं बलिदान की भावनायें उत्पन्न की।

उग्रवादियों ने काँग्रेस कि उदारवादी विचारधारा को भी प्रभावित किया। उग्रवादियों से प्रेरित होकर ही 1906 ई० में काँग्रेस द्वारा स्वराज, स्वदेशी बहिष्कार तथा राष्ट्रीय शिक्षा के प्रस्ताव पास किया। उग्रवादियों के सिद्धान्तों को सफलता मिली क्योंकि राष्ट्रीय आन्दोलन अब उग्रवादियों के सिद्धान्तों पर आधारित किया गया। महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन में ~~स्वदेशी~~ बहिष्कार स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा के तत्व सम्मिलित थे।

उग्रवादियों द्वारा अपनी माँगें मनवाने के लिये बहिष्कार एवं स्वदेशी आन्दोलन चालू किये गये जिन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आन्दोलन को अत्यधिक लोकप्रियता मिली। उग्रवादियों ने अंग्रेजों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि भारतीय अब स्वतंत्रता प्राप्त अनुनय विनय से नहीं बल्कि शक्ति प्रदर्शन कर लेना चाहता है इसके लिये वे कई शहादतें भी देने के लिए तैयार हैं। क्योंकि इन उग्रवादियों को अंग्रेजों कि कई यातनाएँ सहनी पड़ी। सैकड़ों आन्दोलन कारियों को बंदी बना लिया गया तिलक को जेल कि सजा भुगतनी पड़ी। उग्रवादियों के निशाने पर भी कई अंग्रेज सैनिक एवं पदाधिकारी आये। उग्रवादियों में दमखम कम नहीं हुई थी और उन्हें कभी भी अंग्रेजों के न्याय प्रियता मे विश्वास नहीं था।

Sunday 20

ANUARY 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26

Scanned with Can